هندى

मुख्तसर
रहनुमाए हज्ज

Anuvadk
AtawrRhman s:dI

دَلِيلُ
الحَاج والمُعتَمر
وزائر مسجد رسول صلى الله عليه وسلم

تأليف/ مجموعة من العلماء

المترجم باللغة الهندية

عطاء الرحمن بن عبد الله السعيدى

المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد توعية الجاليات بالأحساء

अल-अहसा इस्लामिक सेन्टर

AL-AHSA ISLAMIC CENTER

भूमिका

हज्ज इस्लाम का एक (आधार)रुक्न है जो जीवन में एक बार हर बालिग़,बुद्धिमान धन,माल और स्वास्थ के एतबार से ताक़त रखने वाले आज़ाद मुसलमान मर्द एवं औरत पर फ़र्ज तथा अनिवार्य है। अल्लाह पाक ने फ़रमाया :

وَلِلَّهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيلاً وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعَالَمِينَ (آل عمران: من الآية٩٧)

(और लोगों पर अल्लाह का हक़ है जो उस घर तक जाने की ताक़त रखे वह उस का हज्ज करे जो इस आज्ञा को न मानेगा तो अल्लाह भी पूरी दुनिया वालों से बेनियाज़ तथा निस्पृह है (आले इमरान : ९७)

बुखारी-मुस्लिम में उमर रज़ियल्लाहु अनहु से रिवायत है.जिसका अर्थ यह है : कि इस्लाम की बुन्याद एवं आधार पाँच चीज़ों पर है,इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरक्त कोई

सच्चा माअ़बूद अथवा पुज्य नहीं और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं, सलात(नमाज़)काइम करना,ज़कात अदा करना, रमज़ान के (सौम)रोज़े रखना तथा अल्लाह के घर का हज्ज करना ।

ऊस आदमी पर हज्ज करना तुरंत वाजिब तथा अनिवार्य हो जाता है जो जिसमानी तथा माली ताक़त रखता हो जैसा कि सूरह आलेइमरान आयत न॰97 से ज़हिर होता है ।

तथा मुस्नद अहमद की हदीस जो अबदुल्लाह बिन अब्बस रज़ियल्लहु अन्हुमा से अती है उस से भी यही मालूम होता है

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आदेश दिया कि

تعجلو الى الحج يعنى الفريضة فان احدكم لا يدرى ما يعرض له (مسند أحمد)

(फज़्र हज्ज को जल्द अदा करो तुम में से कोई नही जानता कि उस के भविष्य में क्या आने वाला है)।

आइशह रज़ियल्लाहय अनहा कहती हैं :

قالت يا رسول الله هل على النساء من جهاد؟ قال:

عليهن جهاد لا قتال فيه : الحج و العمرة

(ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क्या औरतों पर जिहाद अनिवार्य है? फरमायाः उन पर ऐसा जिहाद है जिस में लड़ाई नहीं वह हज्ज तथा उमरह है)इमाम अहमद और इब्ने माजह ने इस हदीस को सही सनद के साथ बयान किया है।

हज्ज पूरे जीवन में केवल एक बार फर्ज़ है । आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कहाः الحج مرة فمن زاد فهو تطوع (हज्ज एक बार है जिस ने अधिक किया तो वह नफ़्ली है)

हज्ज की फज़ीलत एवं प्रमुखता में बहुत अधिक हदीसैं हदीस की किताबों मे मौजूद हैं । हम निम्न में कुछ हदीसों का तरजमह तथा अनवाद लिख रहे है

(1) हज्जे मबरूर का फल जन्नत ही है । .(मुत्तफ़क़ अ़लैह) हज्जे मबरूर का अर्थ वह हज्ज है जिस में अल्लाह की नाफरमानी न की गई हो, तथा उस की निशानी यह है कि हज्ज के बाद हाजी नेकी एवं पुन्न के काम अधिक करने लगे और पुनः पाप की ओर न लौटे ।

(2) रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अमर बिन अलआस से कहा था कि हज्ज पिछले तमाम पाप को मिटा देता है । (सही मुस्लिम)

(3) हज्ज तथा उमरह सदैव करते रहा करो इस लिये कि यह दोनों गरीबी और पाप को इस प्रकार समाप्त कर देते हैं जिस प्रकार धूनी लोहे के ज़ंग को समाप्त कर देती है । (तबारानी - दारकुत्नी)

(4) अल्लाह के रासते में जिहाद करने वाला , हज्ज और उमरह करने वाला यह सब अल्लाह के मेहमान होते है अल्लाह ने इन को बुलाया तो यह चले आए और अब यह जो कुछ अल्लाह से माँगें गें वह इनको दे गा ।

हज्ज के यात्रा के लिये तय्यारी

मुसलमान जब हज्ज या उमरह के लिये यात्रा करने का इच्छा करे तो उस के लिये निम्न बातैं मुसतहब एंव उत्तम हैं ।

(1) अपने पुरे घर वालों तथा मित्रों को अल्लाह के भय और तक़्वा,(सन्यम)की नसीहत करे और आदेश दे ।

(2) अगर उस के ऊपर क़र्ज़ हो तो सारे हिसाब को लिख दे और उस पर गवाह भी बना दे

(3) अपने सारे पाप से सच्ची तौबह एंव छमा याचना करे ,अल्लाह तआला ने अदेश दिया है :

وَتُوبُوا إِلَى اللَّهِ جَمِيعاً أَيُّهَا الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ(النور الآية(मोमिनो! सब मिल कर अल्लाह से तोबह करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ) (सूरह नूर31)

सच्ची तौबह वह है जिस में पाप को बिल्कुल छोड़ दिया जाये, भविष्य में उस पाप के न करने

का निष्चय इरादह किया जाये,अपने किये हुये पाप पर शरमिन्दह(लज्जित)हो,हाँ अगर लोगों की जान या माल या इज़्ज़त पर अत्याचार करके पाप किया हो तो ऐसी हालत में अपने मुआमलात को सही आधार पर साफ़ करना हर हज्ज पर जाने वाले के लिये आवश्यक है ।

(4) हज्ज तथा उमरह में हलाल और पाक माल का प्रबन्ध होना चहिये क्यों कि अल्लाह पाक है पाक चीज़ों को ही कुबूल एवं स्वीकार करता है ।

(5) हाजी लोगों से भीक एवं भिक्षा न मांगे और इस हज्ज तथा उमरह का मक़सद तथा उद्देश्य अल्लाह को प्रसन्न करके जन्नत प्राप्त करना हो । पवित्र स्थानों में वह काम करे जो अल्लाह तआ़ला की इच्छा तथा उसकी नज़दीकी का साधन बनें और अपने हज्ज का मक़सद एवं उद्देश्य दुनिया की लालच, दिखावा, शुहरत प्राप्त करना, तथा घमंड़ का मक़सद न बनाये । यह

सब बहुत घटिया तथा सारे अमल को बरबाद करने वाले काम हैं ।

(6) हज्ज और उमरह के सारे अहकाम और मसायल पहले जान लें और सीख लें । जब वह किसी सवारी पर सवार हो तो पहले बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम फिर तीन बार अल्लाहु अक्बर कहे और यह दुआ पढ़े!

सुब्हा-नल्लज़ी सख्ख-र लना हाज़ वमा कुन्ना लहू मुक़रि-नी-न वइन्ना इला रब्बिना लमुन्क़लिबून. अल्लाहुम्म-इन्नी अस्अलुक फी सफरी हाज़ अल्बिर्र वत्तक़व. वमिनल्-अमलि मा तरज़ा अल्लाहुम्म हव्विन अलैना स-फ-रना हाज़ वत्विअ़ अ़न्ना बुअ़दह अल्लाहुम्म अन्-तस्साहिबु फिस्स-फरि वल्-खली-फतु फिल्-अहल. अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ुबि-क मिन् वअसाइस्स-फरि व-कआ-बतिल् मन्ज़रि व सूइल् मुन्क़लबि फिल् मालि वल्अहलि ।

سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَ لَنَا هذَا وَ مَا كُنَّالَه مُقْرِنِیْنَ وَ اِنَّا اِلی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّی أَسْئَلَكَ فِی سَفَرِیْ هذا اَلْبِرَّ وَ اَلتَّقْوی وَ مِنَ الْعَمَلِ مَا تَرْضی اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَیْنَا سَفَرَنَا هذا وَاَطْوِ عَنَّا بُعْدَهُ اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَ الْخَلِیْفَةُ فِی الأَهْلِ اَللّٰهُمَّ اِنِّی أَعُوْذُ بِكَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَ كَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَ سُوْءِ الْمُنْقَلِبِ فِی الْمَالِ وَ الأَهْلِ

मेरे प्यारे मित्रो ! हज्ज एक बहुत महान तथा उत्तम इबादत है जिस में आपने अपना धन भी खर्च किया है और जिसमानी तथा शारीरिक दुख और परेशानी भी उठाते हैं इस लिये हज्ज मुकम्मल रसूल की सुन्नत अनुसार करने की प्रयास करें | At^ hm inMn me& hJj ke kam p/itidn Anusar il` de rhe hE& |Agr Aap ;sI Anusar hJj kre& ge to ;N=aALlah su¨t Anusar ho ga |

मुख्तसर रहनुमाए हज्ज

ऊमरह के अर्कान(आधार)

ऊमरह के तीन अर्कान हैं (१) एहराम बाँधना (२)तवाफ करना (३) सफा-मर्वा के बीच (सई) दौड़ लगाना ।

हज्ज के अर्कान(आधार)

(1) एहराम (निय्यत)हज्ज करने की निय्यत करना
(2) अरफात में ठहरना (3) तावफे ज़ियारत
(5) सफा और मर्वा के बीच दौड लगाना

जिस ने इन अर्कान में से कोई रुक्न छोड दिया तो बिना उसे किये हुये हज्ज सही नहीं होगा

हज्ज के वाजिबात

(1) मीक़ात से एहराम बाँधना (2) मग्रिब के बाद तक अरफात के मैदान मे रहना (3) 10ज़ुल्हिज्जह की रात मुज़दलिफह में बितान (4) 11 –12- 13 ज़ुल्हिज्जह की रातैं मिना में बिताना (5) 11 –12- 13 ज़ुल्हिज्जह को जमरात को कंकरी मारना

(6) विदाई तवाफ करना(7) सिर के बाल कटवाना या मुडाना (अगर किसी को जल्दी हो तो मिना में केवल उसके लिये11 –12 ज़िल् हिज्जह की रात बिताना काफी होगा ।)

जिसने इन में से कोई वाजिब छोड दिया तो उसे एक बलिदान देना होगा जिसे मक्कह में ज़बह करके मक्कह के निर्धनों में बाँट दिया जाये गा तथा उस में से स्वयं कुछ ना खाये गा और उसका हज्ज सही होगा ।

हज्ज की सुन्नतैं : जिस ने कोई सुन्नत छोड़ दिया उस पर कोई हर्जाना और दणड नहीं ।

(**1**) एहराम बांधते समय स्नान करना तथा सुगंध लगाना (**2**) मर्दों का सुफ़ेद लुंगी एंव चादर में एहराम बांधना(**3**)मर्दों का ज़ोर ज़ोर से तल्बिय्यह कहना (**4**) अरफह की रात **9** ज़ुल्हिज्जह मिना में बिताना (**5**) हजरे अस्वद को चुंबन देना (**6**)इज़्तिबाअ(एहराम की चादर के दाहने कनारे को तवाफे कुदूम या उमरह में दाहने कंधे के नीचे

करके बायें कंधे पर इस प्रकार डाला जाये कि दाहिना कंधा खुला हो और बायां कंधा ढका हो **)**
(**7**)रम्ल करना**(** तवाफे कुदूम या उमरह के पहले तीन चक्कर में छोटे छोटे कदम रखते हुये तेज़ दुल्की चाल चलना) |

कुर्बानी

ज़बह करने का स्थान : मिना तथा मक्कह एंव हरम के बाक़ी दूसरे स्थानों में भी जायज़ है |
ज़बह करने का समय : ईद के दिन तथा ईद के बाद तीन दिन**11, 12, 13**की शाम तक |
कुर्बानी के जानवरः ऊंट,गाय, बक्री, भेड़ बक्रा |
जानवर का आयु : **6**महीने का भेड,दाँता बक्रा या गाय या ऊंट, एक भेंड़ या बक्रा एक आदमी की ओर से होगा तथा एक गाय या ऊंट सात आदमी की ओर से हो गा कुर्बानी की ताक़त ना

रखने पर हज्ज के दिनों मे तीन रोज़े और सात रोज़े हज्ज से वापसी के बाद रख ले ।

जिन जानवर की कुर्बानी जायज़ नहीं.अन्धा जिसका अन्धा होना ज़ाहिर हो,लेंगडा जिसका लेंगडाना ज़ाहिर हो,बीमार जिसकी बीमारी ज़ाहिर हो,कमाज़ोर जिसकी कमज़ोरी बिल्कुल ज़ाहिर हो तथा कानकटा और टुटी सींग वाला ।

8 जिल्हिज्जह से पहले के काम (हज्ज इफ़राद वाले)

(1)मीक़ात से एहराम बांधना तथा लब्बैक हज्जन कहते हुए तल्बियह कहना(2)मक्कह के लोग एंव उस में ठहरने वाले वहीं से एहराम बांधैं जहाँ वह ठहरे हैं(3)तवाफ़े कुदूम(4)सई अगर इफ़राद करने वाला तवाफ़ के बाद सई न किया हो या सीधे मिना चला गया हो ऐसी हालत मे वह तवाफ़े इफ़ाज़ह के बाद सई करे गा तथा दस ज़िल्हिज्जह तक अपने एहराम में रहे गा ।

हज्ज क़िरान वाले : (1) मीक़ात से लब्बेक हज्जन व उमरतन कहते हुये एहराम बांधना (२) तवाफ़े कुदूमं (२) सईः इस सई को तवाफ़े इफ़ाज़ह(ज़ियारत)के बाद भी कर सकता है मुहरिम१०ज़िल्हिज्जह तक अपने एहराम में रहते हुये एहराम के वर्जित (हराम) कामों से बचे गा |

हज्ज तमत्तो वाले :
(1) मीक़ात से लब्बेक उमरतन बिहा इलल हज्ज कहते हुये एहराम बांधना (2)तवाफ़ेकुदूम(उमरह)
(3) सई (4) बाल कटवाना या मुडाना
(5) 8 ज़िल्हिज्जह तक एहराम खोल कर हलाल रहना |

8 जुलहिज्जह के कामः
हज्ज इफ़राद तथा हज्ज क़िरान (वालों के लिये)

सुबह मिना जाना वहाँ बिना जमा किये हुये पाँच समय की (सलात)नमाज़ अदा करना,चार रकअ़त वाली दो दो रकअ़त कस्र के साथ ज़ुहर. अस्र. मग्रिब. इशा. फज्र ।

हज्ज तमत्तो वालेः

एहराम बाँध कर मिना जाना तथा बिना जमा किये हुये पाँच समय की नमाज़ अदा करना, चार रकअ़त वाली दो दो रकअ़त कस्र के साथ ज़ुहर. अस्र. मग्रिब. इशा. फज्र ।

9 ज़ुलहिज्जह के काम

हज्ज इफ़राद-हज्ज क़िरान-हज्ज तमत्तो सब के लिये ।

(1) सूर्य रोशन हो जाने के बाद अरफ़ात जाना । ज़ुहर के पहले समय में एक अज़ान तथा दो इक़ामत से क़स्र(दो,दो रकअ़त) के साथ ज़ुहर एंव अस्र की नमाज़ अदा करना पहले ज़ुहर उसके बाद तुरन्त अस्र(जमा तक़दीम) (2)सूर्य डूब जाने के बादतक अरफ़ात में रहना उसके बाद मुज़दलिफ़ह जाना (3) मुज़दलिफ़ह पहुंच जाने के

बाद जमा एंव क़स्र करके एक अज़ान और दो इक़ामत से मग्रिब तथा इशा की नमाज़ अदा करना (4) मुज़दलिफ़ह में रात बिताना तथा फजर् की नमाज़ पढ़ना (5) जमरह अक़बह को मारने के वासते सात कंकरी लेना इसे मिना से भी ले सकते हैं और मुज़दलिफ़ह से सूर्य निकलने से पहले मिना के लिये चल देना,अगर किसी के साथ औरत या कमज़ोर तथा दुर्बल लोग हों तो वह रात के तीसरे पहर भी जा सकता है ।

10 ज़ुलहिज्जह के काम

हज्ज इफ़राद वाले :

सूर्य रोशन होने से पहले मुज़दलिफह से मिना के लिये निकलना(1)हर कंकरी के साथ अल्लाहु अकबर कहते हुये जमरह अक़बह को सात कंकरी मारना(2)बाल कटान या मुँड़ाना(3) एहराम खोल कर कपड़े पहनना(छोटा हलाल) (4) तवाफ़े इफ़ाज़ह(ज़ियारत)करना(बडा हलाल)यह रुक्न है

(5)तवाफ़े इफ़ाज़ह को 11-12- या बिदाई तवाफ के साथ करने के लिये टालना जायज़ है (6) अगर पहले सई नहीं किया है तो तवाफ़े इफ़ाज़ह (ज़ियारत) के बाद सई करना ।

10 जुल्हिज्जह के काम(हज्ज क़िरान वाले) सूर्य रोशन होने से पहले मिना के लिये निकलना(1)हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक्बर कहते हुये जमरह अक़बह को सात कंकरी मारना (2)कुर्बानी करना यह आदेश मक्कह के बासी के लिये नहीं है(3)बाल कटाना या मुँडाना औरत अपने बालों को चोटी से उंगली के पोर के बराबर काट ले गी(4)एहराम खोल कर कपड़े पहनना(5) तवाफ़े इफ़ाज़ह (ज़ियारत)यह रुक्न है और अगर पहले सई नहीं किया है तो सई करना

10 जुल्हिज्जह के काम(हज्ज तमत्तो वाले) सूर्य रोशन होने से पहले मिना के लिये निकलना (1)हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक्बर कहते हुये जमरह अक़बह को सात कंकरी मारना(2)कुर्बानी

करना यह आदेश मक्कह के बासी के लिये नहीं है(3)बाल कटाना या मुँड़ाना औरत अपने बालों को चोटी से उंगली के पोर के बराबर काट ले गी(4)एहराम खोल कर कपड़े पहन ना(5) तवाफ़े इफ़ज़ह(ज़ियारत) यह रुक्न है (6)सई करना यह रुक्न है सई दूसरे दिन या तीसरे दिन या बिदाई तवाफ के साथ करना जायज़ है ।

11-12-13 ज़ुलहिज्जह के काम

हज्ज इफ़राद-हज्ज क़िरान-हज्ज तमत्तो (सब के लिये)

(1)11-12-13ज़ुल्हिज्जह की रात मिना में बिताना वाजिब है(2)हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक्बर कह कर तीनों जमरात पहले छोटे फिर बीच वाले फिर बड़े को तरतीब के साथ सूर्य ढ़लने के बाद सात सात कंकरी मारना और छोटे एंव बीच वाले के बाद दुआ करना । जिन लोगों को जल्दी हो वे 12 ज़ुलहिज्जह को मिना से आ सकते हैं शर्त यह

है कि मिना से सूर्य डूबने से पहले रवाना हो जायें, फिर विदाई तवाफ करैं ।

अगर **13 ज़ुल्हिज्जह मिना में ठहरा है तो** जिस प्रकार12 ज़ुल हिज्जह को कंकरी मारा है उसी प्रकार आज भी मारे एंव दुआ करे और मिना से मक्कह आए तथा बिदाई तवाफ़ करे । हैज़ और निफ़ास वाली औरतों के अतिरिक्त हर एक के लिये बिदाई तवाफ़ वाजिब है फिर मक्कह छोड़ दे ।

छोटा हलाल होने के बाद हाजी के लिये पत्नी से मिलाप के अतिरिक्त हर कार्य हलाल है तथा तवाफ़े इफ़ाज़ह(ज़ियारत) के बाद मिलाप भी हलाल है जब कि इफ़राद, क़िरान एंव तमत्तो वाले सई पहले कर चुके हों प्रन्तु हज्ज तमत्तुअ में तो बड़ा हलाल होने से पहले सई करना अवश्य है ।

हिन्दी ज़बान में मैंने यह किताब इस कार्ण अनुवाद किया है कि हमारे बहुत से मुसलमान भाई केवल हिन्दी भाषा जानते हैं और खास कर नये मुस्लिम. तथा हिन्दी भाषा में कोई उचित किताब नहीं थी । हमारे बहुत सारे मित्रों का बार बार कहना था कि हज्ज तथा उमरह के मासायल पर

कोई ऐसी किताब हो जिस में केवल लिखाई हिन्दी हो और भाषा आसान तथा उर्दू हो। इस लिये कि संस्कृत भाषा वाली हिन्दी का समझना बहुत कठिन होता है। अतः लोगों के लाभ तथा अल्लाह की इच्छा के लिये मैं ने यह काम किया है। जिस में केवल लिखाई हिन्दी है और कहीं कहीं हिन्दी शब्द का भी प्रयोग किया है ताकि सब लोगों के समझने के लिये आसानी हो।

इस किताब के पढ़ने वालों से निवेदन है कि अगर किसी प्रकार की गलती पायें तो कृपा करते हुये खबर दें ताकि उस को सही किया जा सके। मैं ऐसे लोंगों का आभारी रहूं गा।

अल्लाह तआ़ला का मैं बहुत ही आभारी हूँ कि उस ने हम से यह काम लिया साथ ही साथ मैं सऊदी हुकूमत का बहुत आभारी हूँ जो अपने देश में बहुत से दावती सेंटर खोल कर दीन की सेवा कर रही है। इसी प्रकार मैं अपने इस्लामिक सेन्टर अहसा तथा उस के तमाम कार्य करताओं

का भी बहुत ही आभारी हूँ जिन्हों ने हमैं इस महान काम का अवसर दिया। अल्लाह तआ़ला इन सब को प्रलोक के दिन सफल करे आमीन।

हम अल्लाह से प्रार्थना करते है कि वह इस संक्षिप्त पत्रिका को हाजियों के लिये सत्य मार्ग दर्शक बनाये और सभी के हज्ज को स्वीकार एवं कुबूल करे। सारे हाजियों से अनुरोध है कि वे अपनी दुआ़ओं में मुझे तथा समस्त मुसलमानों को याद रखें।

आप का शुभेच्छुक
अताउर्रहमान सईदी
अल अहसा इस्लामिक सेन्टर
2-8-2006
8-7-1427H

हज्ज और उमरह

हज्ज करने वाले लोगो! अल्लाह तआ़ला का दया है कि उस ने आप को अपने घर का हज्ज और हरम पाक की ज़ियारत का अवसर दिया। हम यह नसीहतैं करते हुये दुआ़ करते हैं कि अल्लाह तआ़ला सब के हज्ज को कुबूल करे और तवाफ तथा सई का अच्छा फल दे।

1.यह बात सदा ध्यान में रहनी चाहिये कि आप एक मुबारक यात्रा पर अल्लाह की ओर हिज्रत के इरादह से निकले हैं जिस की बुनयाद तौहीद, खालिस निय्यत अल्लाह की दावत पर लब्बैक और उस की आज्ञापालन पर है इस से बड़ा किसी काम का सवाब और फल नहीं।

हज्जे मबरूर(मक़बूल हज्ज)का फल केवल जन्नत है।

2.इस बात का ध्यान रहे कि शैतान अप के बीच इखतिलाफ (विरोध) न पैदा कर दे,इस लिये कि वह तो घात में बैठा दुशमन है,अतः अल्लाह की इच्छा के लिये एक दूसरे से प्रेम रखें झगड़ा लड़ाई और अल्लाह की नाफरमानी से बचते रहें। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश है कि : तुम में से कोई आदमी उस समय तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक अपने भाई के लिये वही न पसन्द करे जो अपने लिये पसन्द करता है। (बुख़ारी-मुस्लिम)

3. अगर दीनी कामों तथा हज्ज के मसायल में कोई परेशानी या शंका हो तो तुरन्त उलमा से पूछ लें अल्लाह तआला ने फरमाया है :

فَاسْأَلُوا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لا تَعْلَمُونَ (النحل: الآية٤٣)

(अगर तुम नहीं जानते हो तो इल्म वालों से पूछ लिया करो।सूरह नहल :४३)तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का आदेश है कि : जिस के लिये

अल्लाह भला चहता है उसे दीन की समझ देता है ।

4.अल्लाह तआ़ला ने हमारे लिये कुछ कामों को फज़्र(अनिवार्य)कर दिया है और कुछ को मसनून एंव मुसतहूब । आदमी फज़्र(अनिवार्य)कामों की पाबन्दी नही करता उस के मसनून अमल कुबूल नहीं होते । कुछ हज्ज करने वाले लोग इस हक़ीक़त को भूल जाते हैं और हज्जरे अस्वद को चूमने तथा तवाफ में रमल (थोड़ा दौड़ कर दुलकी चाल चलना)करने.मक़ामे इब्राहीम के पीछे सलात (नमाज़) और ज़मज़म का पानी पीने के समय मुसलमान मर्द तथा औरतों को तकलीफ देते हैं जबकि यह सारे कार्य केवल मसनून हैं और मोमिन को दुख पहुँचान हराम है । फिर क्यों सुन्नत अदाकरने के लिये हराम काम करत हैं एकदूसरे को दुख पहुँचाने से बचना अवश्य तथा ज़रूरी है अल्लाह अपको महान पुन्य प्रदान करे ।

इस मसलः को अच्छे प्रकार जानने के लिये इन बातों का ध्यान रखैं!

१. मुसलमान के लिये यह उचित नहीं कि हरम में या किसी और स्थान पर किसी औरत के बग़ल में या उस के पीछे सलात (नमाज़)पढ़े । अगर इस से बच सकता है तो फिर ऐसा करना सही नहीं प्रन्तु औरतैं मर्दों के पीछे सलात(नमाज़) पढ़ सकती है ।

२.हरम शरीफ़ के दरवाज़े तथा अंदर जाने के मार्गों में नमाज़ पढ़ना और मार्ग को बन्द करने का कारण बनना सही नहीं । चाहे जमाअ़त ही क्यों न छूट जा रही हो ।

३.कअ़बह शरीफ़ के आस पास बैठने,इस के क़रीब सलात अदा करने या हज्जरे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम के पास रुकने के कारण (विशेष रूप से भीड़ के समय)अगर लोगों को तवाफ करने में

रुकावट होती है तो ऐसा करना सही नहीं इस लिये कि इस में सारे मुसलमानों को दुख देना है ।

४ . हज्जरे अस्वद को चूमना सुन्नत है और मुसलमान का इहतिराम एवं आदर अनिवार्य तथा फर्ज़ है । सुन्नत के लिये फ़र्ज़ को खो देना किसी तरह भी सही नहीं ,भीड़ के समय हज्जरे अस्वद की ओर केवल इशारह एवं संकेट करना और अल्लाहुअक्बर कहते हुये आगे बढ़ जाना ही काफ़ी होगा । तवाफ के अस्थान से सफों को चीरना और लोगों को धक्के देना किसी प्रकार उचित नहीं । बल्कि लोगों के साथ चलते हुये धीरे से निकल जाना चाहिये ।

५.रुक्ने यमानी को चूमना सुन्नत नहीं अगर भीड़ न हो तो बिस्मिल्लाह अललाहुअक्बर कह कर अपने दाहने हाथ से केवल छू ले और हाथ को चुम्बन न दे तथा अगर उस का छूना कठिन हो तो छोड़ कर तवाफ करता रहे न ही रुक्ने यमानी

की ओर इशारह करे और न ही उस के सामने आकर अल्लाहुअक्बर कहे इस लिये कि यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है। रुक्ने यमानी तथा हज्जरे अस्वद के बीच यह दुआ़ पढ़ना बेहतर और मुसतहब है। रब्बना आतिना फिद्दुनया ह-स-न-तव्वफिल्आखि-रति ह-स -न-तव्वाकि़ना अ़ज़ाबन्नारि.

(رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ)

(ऐ हमारे पालनहार !हमें इस संसार में भलाई प्रदान कर और परलोक में भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से बचा दे)(सूरह बक़रह201)

अन्त में हम तमाम हाजियों को अल्लाह की किताब तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत की (इत्तबाअ)अनुसारण की नसीहत करते हैं अल्लाह तआला का अदेश है।

وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ(آل عمران:घछ)

(और अल्लाह व उसके रसूल की इताअत करो ताकि तुम उस की रहमत के हक़दार बन सको)(आले इमरान:१३२)

इस्लाम से निकाल देने वाली बातें

जिन को नवाक़िज़े इस्लाम कहा जाता है ।

मेरे इस्लामी मित्रो! दस ऐसी बातें हैं जिन में से हर एक मनुष्य को इस्लाम से निकाल देती हैं तथा यह कार्य अधिक लोगों से होता रहता है ।इस लिये मैं ने लोगों को अवगत करने के लिये लिखना उचित समझा ।

१- अल्लाह की इबादत में दूसरों को भागी दार तथाशरीक बनाना । अल्लाह तआला का आदेश है: إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ (المائدة: من الآية٧٢)

(जो अल्लाह के साथ मिश्रण(शिर्क) करेगा अल्लाह ने उस पर स्वर्ग हराम एवं निषेध कर दी हैऔर उसकाठिकाना नरक है तथा अतयाचारियों एवं ज़ालिमौं का कोई सहायक न होगा ।)(सूरह माइदह 72)

मृतक एवं मरे लोगों को पुकारना,उन से मदद और दुहाई माँगना,उनके लिये नज़र तथा नियाज़ करना और उन के नाम से ज़बह तथा वध करना अल्लाह की इबादत में शिर्क करना है ।

२-जिसने अल्लाह और अपने दरमियान किसी को सिफारशी एवं माध्यम बनाया,उसे पुकारा तथा उस से शफाअत की निवेदन की और उस पर भरोसा किया ऐसे अदमी के काफ़िर होने पर पूरी उम्मत का इत्तिफाक़ है ।

३-जिसने मुशिरिकों को काफिर नहीं समझा या उनके काफ़िर होने में शका एवं संदेह किया तथा उन के धर्म को सही जाना वह काफ़िर हो गया।

४- जिसने यह आस्था एवं अक़ीदह रखा कि कोई दूसरा मार्ग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग से अच्छा एवं पूर्ण तथा अफज़ल हे या यह कि किसी और का निर्णय आप के निर्णय से बेहतर हे, जैसे वह लोग जो तागूती(असुर)

ताक़तों के नियमों को आप के नियमों पर प्रमुखता देते हैं , वह काफ़िर हे ।

अ : उदाहरणतः यह अक़ीदह तथा आसथा रखना कि मनुष्य के बनाये हुये नियम और जीवन के प्रबन्ध इस्लामी धर्मशास्त्र से अफ़ज़ल(सवोंत्तम) हैं या यह कि बीसवीं सदी में इस्लामी नियम को लागू नहीं किया जासकता,या यह कि मुसलमानों की पसती एवं अधस्थल का कारण इस्लाम था. या यह कि इस्लाम केवल उन तआलीमात एवं शिक्षाओं का नाम है जो बन्दे और अल्लाह के रिश्ते को ज़ाहिर करते हैं, जीवन के दूसरे मुआमलात में उस का कोई भाग नहीं ।

ब. यह कहना कि चोर का हाथ काटना या विवाहिक ज़ना एवं बलातकार करने वाले को सन्गसार करना इस समय उचित नहीं ।

ज.यह अक़ीदह रखना कि शास्त्रानुसा मुआमलात अल्लाह के हुदूद या उन के अलावह कामों में

ग़ैर इस्लामी नियमों के आधार पर फैसिलह करना जायज़ हे(चाहे उस का यह विश्वास न हो कि वह नियम इस्लामी शरीअत से बेहतर हैं) क्योंकि उम्मत की सहमती के अनुसार जिस चीज़ को अल्लाह ने ह़राम कर दिया है उसे उस ने हलाल किया और यह तमाम उम्मत का निर्णय है कि जो कोई अल्लाह के ह़राम की हुई चीज़ों को हलाल करे जिसका दीन का भाग होना ज़ाहिर है जैसे ज़ना बलातकार,शराब पीना सूद और ग़ैर इस्लामी नियम को लागू करना आदि वह काफ़िर है ।

५- जिस किसी ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की लाई हुई बातों में से किसी बात को नापसन्द किया वह काफ़िर हो गया(चाहे वह उस पर अमल ही क्यों न करे)अल्लाह तआला का आदेश है :

ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنْزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ (محمد:٩)

(यह इसलिये कि उन्हों ने अल्लाह के उतारे हुये नियमों एवं धर्मशास्त्रों को बुरा समझा, तो अल्लाह ने उन के कर्मों को बरबाद कर दिया)(सूरह महम्मदः९)

६-जिसनेअल्लाह के दीन की किसी बात,या सवाब और पुन्य सज़ा और इक़ाब का मज़ाक़ ऊडाया वह काफ़िर हो गया ।

قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ لا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ (التوبة الآية ٦٥-٦٦)

(ऐ नबी ! आप कह दें कि क्या तुम लोग अल्लाह, उस की आयतों और उस के रसूल का मज़ाक़ उड़ाया करते थे अब बे वैलू उज़र न बयान करो तुम लोग तो ईमान के बाद काफ़िर हो गये)(सूरह तौबहः६६-६५)

७- जादू, पती एंव पतनी के बीच नफ़रत पैदा करना,अथवा शैतानी अमलों द्वारा मनुष्य के हृदय में ऐसी चीज़ की इच्छा डाल देना जिसे वास्तव में वह नही चाहता है सो जो अदमी ऐसा करेगा या ऐसी बातों से प्रसन्न रहेगा वह काफिर हो जायेगा अल्लाह का आदेश है !

وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّى يَقُولا إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلا تَكْفُرْ
(البقرة: من الآيةधछछ ©NO DISTRIB ALLOWED)

(वह दोनों किसी को उस समय तक नहीं सिखाते जब तक यह बता कह नहीं देते कि हम तो(लोगों के लिये) केवल एक परिक्षा एवं इमतिहान हैं, इस वासते कुफ्र न करो.) (बक़रह102)

८- मुशरिकों की सहायता और मुसलमानों के खिलाफ उनकी सहायता करना .अल्लाह का आदेश है :

وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ إِنَّ اللَّهَ لا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ
(المائدة: من الآيةठ ©NO DISTRIB ALLOWED)

(और जो उन को मित्र बनाये गा वह उन्हीं में से हो जायेगा, अल्लाह अत्याचार करने वाली क़ौम को हिदायत नहीं देता) (माइदहः51)

९- जिस का यह अक़ीदह हो कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर उतारे गये धर्म से निकलने की इजाज़त है । वह काफ़िर है कुर्आन में हैः

وَمَنْ يَبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلامِ دِيناً فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَاسِرِينَ (آل عمران:٨٥)

(जो अदमी इस्लाम के अलावह और किसी दीन को पसन्द करेगा ,उसका अमल कुबूल न होगा और वह प्रलोक में हानि उठाने वालों में से हो गा) (आले इमरान 85)

१०-अल्लाह के दीन से पूर्ण विमुखता (मुंह मोड़ना) या किसी ऐसी बात से विमुखता जिस के बिना सत्य इस्लाम को पा नहीं सकता ऐसा ज्ञान और ऐसा कर्म कुबूल होने के लायक नहीं |

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِآيَاتِ رَبِّهِ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِينَ مُنْتَقِمُونَ (السجدة:٢٢)

(और उस आदमी से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जिस को अल्लाह की आयतों की याद दिलाई जाये तो उस से मुंह मोड़े हम अवश्य अपराधियों से बदलह लेंगे) (सूरह सजदहः २२)

وَالَّذِينَ كَفَرُوا عَمَّا أُنْذِرُوا مُعْرِضُونَ (الاحقاف: من الآية)

(और जिन लोगों ने सजातीय किया वह लोग धमकियों से मुह मोड़ते हैं) (अहक़ाफ3)

इस्लाम से बाहर करने वाली इन बातों में मज़ाक़ एवं साधारण अथवा ड़ेर, हर प्रकार बराबर हैं केवल वही आदमी अलग है जिसने कठिन हालत या मजबूरी में इन में से किसी कार्य को किया हो। हम अल्लाह के प्रकोप तथा सज़ा से पनाह चाहते हैं।

हज्ज. उमरह तथा मस्जिद नबवी का दर्शन एवं ज़ियारत ।

मुसलमान भाइयो! हज्ज तीन प्रकार है।

१- हज्ज तम-त्तो (२)हज्ज क़िरान(३) हज्ज इफ़राद

हज्ज त-मत्तो,हज्ज के महीनों (शव्वाल जुल्क़अदह, जुल्हिज्जह के पहले दस दिन) में उमरह का इहराम बांधना उमरह करने के बाद इन्तिज़ार करना और फ़िर आठवीं जुल्हिज्जह को मक्कह मुकर्रमह या उस के आस पास से हज्ज का एहराम बांधना ।

हज्जक़िरान. हज्ज और उमरह दोनों का एक साथ इहराम बाँधना, ऐसी हालत में हाजी कुर्बानी के दिन ही हज्ज और उमरह दोनौ से हलाल होगा

दूसरी सूरत यह है कि पहले तो उमरह की निय्यत करे फिर तवाफ़ का आरंभ करने से पहले हज्ज की निय्यत भी करे।

हज्ज इफ़राद, केवल हज्ज की निय्यत करना मीक़ात(एहराम बाँधने के स्थान) से या मक्कह से अगर वहाँ ठेहरा हो या मीक़ात के हुदूद के अंदर किसी दूसरे स्थान से, फ़िर अगर उस के पास कुर्बानी का जानवर है तो दसवीं तारीख तक एहराम में रहेगा,और अगार कुर्बानी का जानवर साथ नहीं लाया है तो हज्ज की निय्यत को उमरह में बदल देना जायज़ होगा। ऐसी सूरत मैं तावाफ़ तथा सई के बाद बाल कटवा कर हलाल हो जाये गा। इस लिये कि जिन लोगों ने केवल हज्ज की निय्यत की और अपने साथ कुर्बानी का जानवर नहीं लाये थे उन को अल्लाह के रसूल ने ऐसा ही आदेश दिया था इसी प्रकार अगर हज्ज क़िरान करने वाले के पास कुर्बानी का जानवर नहीं है तो वह भी हज्ज की निय्यत

को उमरह में बदल दे गा और सब से अफ़ज़ल (सर्वोत्तम) हज्ज हज्ज त-मत्तो है,उन के लिये जो अपने संग कुर्बानी का जानवर न लेगये हौं, इसलिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को ऐसा ही आज्ञा दिया और चेतावनी दी ।

उमरह का तरीक़ह

मीक़ात(एहराम बाँधने का स्थान) पर पहुंचने के बाद हो सके तो स्नान करो, और शरीर पर सुगंध एवं खुश्बू लगाओ प्रन्तु खुश्बू एहराम के कपडे पर न लगने पाये और फ़िर एहराम के कपडे (लुंगी और चादर)पहन लो । बेहतर यह है कि दोनों कपडे सुफ़ैद हौं । औरतैं किसी प्रकार का कपड़ा पहन सकती हैं । मगर शर्त यह हैं कि बेपर्दगी तथा बानव सिंगार के वासते न हो । फिर

उमरह के एहराम की निय्यत करो और कहो लब्बै-क उमरतन लब्बै-क अल्लाहुम्म लब्बै-क लब्बै-क ला शरी-क ल-क लब्बै-क इन्नल् हम्-द वन्ने-म-त ल-क वल् मुल्क ला शरी-क-ल-क+

لبيك عمرة: لبيك اللهم لبيك لبيك لا شريك لك لبيك إن الحمد و النعمة لك و الملك لا شريك لك

मर्द इस तल्बियह को ज़ोर से कहे गा और औरतें धीरे धीरे से । फिर अधिक से अधिक तल्बियह, अल्लाह का ज़िर्क और तौबह तथा इस्तिग़फ़ार करो लोगों को पुण्य का आदेश देते रहो तथा पाप से रोकते रहो ।

(2)मक्कह मुकर्रमह पहुचने के बाद कआ़बह का सात चक्कर (तवाफ़) करो । तवाफ का आरंभ हज्जरे अस्वद के पास से तक्बीर(अल्लाहुअक्बर) कह कर होनी चाहिये और समाप्त भी वहीं होगा । इस तवाफ में दुल्की चाल चलो और चादर भी पलट लो । तवाफ के बीच अल्लाह का ज़िक्र और हर प्रकार की दुआ़ऐ करनी चाहिये तथा

बेहतर यह है कि रुक्ने-यमानी और हज्रे-अस्वद के बीच यह दुआ पढ़े!

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ(البقرة: من الآية)

रब्बना आतिना फिद्दुन्या ह-स-न- तव्वफिल् आखि-रति ह-स-न-तव्वकि़ अजा-बन्नारि (बक़रह201)

फिर अगर हो सके तो मक़ामे-इब्राहीम के पीछे या मस्जिद में किसी दूसरे स्थान पर दो रकअत नमाज़ पढ़ो ।

(3)इस के बाद सफ़ा पहाड़ी के ओर जाओ । उस पर चढ़ कर क़िब्लह की ओर मुंह करो,अल्लाह की प्रशंसा करो और दोनों हाथ उठा कर तीन बार अल्लाहुअक़्बर कहो और दुआ करो, दुआ को तीन बार पढ़ना सुन्नत है और यह भी तीन बार पढ़ो !

لا إله الاالله وحده لا شريك له لـه الملك ولـه الحمد وهو على كل شئى قدير لا الـه الاالله وحده أنجز وعده و نصر عبده و هزم الأحزاب وحده

लाइलाह इल्लल्लाहु वह्दहू लाशरी-क लहू लहूल्मुल्कु वलहुल्हम्दु वहु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू अन्-ज-ज़ वा-दहू व-न-स-र अ़ब्-दहू व-अ-ह-ज़-मल् अहज़ा-ब वह-दहू

तीन से कम बार पढ़ने में भी कोई बात नहीं है फिर पहाड़ी से उतर कर उमरह के वासते सात बार(सफ़ा-मर्वा पहाड़ी के बीच चलो)सई करो, हर बार हरे निशानों के बीच तेज़ चलो और उस के पहले तथा बाद में आम चाल के साथ चलो, मर्वा पहाड़ी पर भी चढ़ो, अल्लाह की प्रशंसा करो और वही करो जो सफ़ा पहाड़ी पर किया था,और होसके तो तकबीर भी कहो, तवाफ़ और सई के लिये कोई खास दुआ़ नहीं है बल्कि जो भी दुआ़ याद हो पढ़ो और कुर्आन की तिलावत करो, प्रन्तु नबी करीम से सबित दुआ़ओं का खास धियान दो ।

4-सई पूरी हो जाने के बाद सिर के बाल मुड़वा दो या कटवा दो,(और ध्यान रहे कि पूरे सिर का हर बाल कट जाये ऐसा न हो कि कुछ इधर से कुछ उधर से)अब उमरह पूरा हो गया और एहराम के कारण जो चीज़ें हराम हो गईं थीं वह सब हलाल हो गईं।

अगर हज्ज तमत्तो की निय्यत थी तो कुर्बानी के दिन एक बकरी या ऊंट या गाय के सातवें भाग की कुर्बानी अवश्य एवं ज़रूरी हो गी,अगर किसी को इसकी ताक़त न हो तो उसे दस रोज़े रखने हों गे,तीन दिन हज्ज के दिनों में और सात दिन देश वापस आने के बाद। बेहतर यह है कि अरफ़ह के दिन से पहले ही तीनों रोज़े रख लिये जायें|

हज्ज का बयान

अगर आप ने हज्ज इफ़राद या हज्ज क़िरान की निय्यत की है तो हज्ज की निय्यत उस मीक़ात(एहराम बांधने का स्थान)से करें जहाँ से आप का गुज़र हो और अगर आप का स्थान मीक़ात की सीमाओं के अंदर हो तो अपने स्थान से निय्यत करें और अगर निय्यत हज्ज तमत्तुअ की की थी तो आठवीं ज़ुल्हिज्जह को अपने ठहरने के स्थान से ही निय्यत करें हो सके तो स्नान (गुसुल) करैं तथा खुश्बू लगायें और एहराम के कपड़े पहन लें(प्रन्तु खुश्बू एहराम के कपड़े में नहीं लगना चाहिये अगर लग जाये तो तुरन्त धुल लें)फ़िर कहैं लब्बै-क हज्जन. लब्बै-क अल्लाहुम्म लब्बै-क.

2-फ़िर(८ज़ुल्हिज्जह) मिना के लिये रवाना हो जाओ,तथा वहॉ ज़ुहर, अस्र , मग़्रिब,इशा और

फ़ज्र की नमाज़ पढ़ो । चार रकअ़त वाली नमाजैं दो रकाअत उन के समय में बिना जमा किये हुये अदा करो ।

3- ९ जुल्हिज्जह(अ़रफह का दिन) को सूरज निकलने के बाद सुकून एवं इतमिनान के साथ अरफ़ात के लिये जाओ । दूसरे हाजियों को दुख न दो वहीं ज़ुहर के समय ज़ुहर तथा अस्र की नमाज़ एक अज़ान और दो इक़ामतों के साथ दो दो रकाअत अदा करो । फिर अरफ़ात की सीमा मे प्रवेष हो जाने का यक़ीन कर लो और नबी करीम का आज्ञापालन करते हुये क़िबलह के ओर मुंह करके दोनों हाथों को उठा कर अधिक से अधिक प्रार्थना ज़िक्र , दुआ़यें करो । अरफ़ात का मैदान पूरा का पूरा ठहरने का स्थान है सूरज डूब जाने तक अरफ़ात की सीमा के अंदर ही रहना चाहिये ।

(4) सूरज डूब जाने के बाद मग़्रिब की नमाज़ पढ़ने से पहले लब्बै-क लब्बै-क पुकारते हुए पुरे शान्ति और इतमिनान के साथ मुज़दलिफह जाओ

और अपने मुसलमान भाईयों को दुख न दो मुज़दलिफ़ह पहुंचते ही सब से पहले मग़्रिब और इशा की नमाज़ एकसाथ क़स्र(दो दो रकअत)एक अज़ान और दो इक़ामत के साथ अदा करो ,उस के बाद फ़ज्र की नमाज़ तक रहो फ़ज्र की नमाज़ अदा करने के बाद नबी करीम की पैरवी करते हुये क़िबलह के ओर मुंह करके दोनों हाथ उठा कर अधिक से अधिक ज़िक्र और दुआ़ करो ।

(5)सूरज निकलने से पहले लब्बैक कहते हुये मिना की ओर रवाना हो जाओ, अगर कोई समस्या , उज़र हो,जैसे कि औरतें तथा कमज़ोर लोग साथ हों तो आधी रात के बाद मिना के लिये रवाना हो सकते हो । अपने संग केवल सात कंकरियाँ ले लो ताकि जमरह अक़्बह को (रमि) कंकरी मार सको बाक़ी कंकरियाँ मिना से ही ले लो(कंकरियौं के धुलने का सुबूत अथवा प्रमाण नबीकरीम से नहीं मिलता है)ईद के दिन(दस जुल्हिज्जह) जमरह

अक़बह को मारने के वासते भी कंकरियाँ मिना से ले सकते हैं ।

(6) मिना पहुंचने के बाद यह काम करो ।

अ. जमरह अक़बह को कंकरी मारो ,जो मक्कह के क़रीब है,सात कंकरियाँ एक एक करके मारो हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक्ब्र कहो ।

ब.अगर तुमहारे ऊपर पशु का बलिदान कुर्बानी वाजिब एवं अनिवार्य हो तो कुर्बानी करो, उसका मास खाओ और निर्धनों को खिलओ ।

ज.सिर के बाल मुंड़ाओ या कटाओ मुंडवान अफ़ज़ल हे औरत के लिये उंगली के एक पोर के बराबर बाल काट लेना काफ़ी हो गा ।

यह सब काम इसी तरतीब से करना बेहतर है । प्रन्तु अगर आगे पीछे हो जाये तो कोई बात नही जमरह अक़बह को कंकरी मारने और बाल मुंडाने या छोटा कराने के बाद एहराम खोल

सकते हैं अब साधारण कपड़े पहन सकते हो और औरत के अलावह वह सारी चौज़ें जो एहराम बाँधते समय हराम थीं हलाल हो गईं ।

(7)अब मक्कह जाओ और तवाफ़े-इफ़ाज़ह (ज़ियारत)और इसके बाद सई (सफ़ा और मर्वह के बीच दौड़ो)करो अगर हज्ज-तमत्तो की निय्यत थी । और अगर हज्ज क़िरान या इफ़राद की निय्त थी और तवाफ़े कुदूम(मक्कह आने के बाद तवाफ़)के साथ सई नहीं की थी तो तवाफ़े इफ़ाज़ह के बाद सई भी करो और इस के बाद औरत भी हलाल हो जाये गी ।(इस तवाफ में कन्धा नहीं खोला जाये गा तथा न ही दुलकी चाल चला जाये गा)

तवाफ़े इफ़ाज़ह मिना में ठिहरने वाले दिनों में कंकरी मारने के बाद मक्कह वापसी के बाद भी किया जा सकता है ।

(8) कुर्बानी के दिन तवाफ़े इफ़ाज़ह(तावाफे जियारत) करने के बाद मिना वापस जाओ और

11,12,13,ज़ुल्हिज्जह की रातैं वहीं बिताओ । अगर कोई केवल दो रातैं ही वहाँ बिता कर वापस आ जाये तो भी जायज़ है ।

(9) 11,12,13,इन दोनों या तीनों दिनों में सूरज ढ़लने के बाद तीनों जमरात को तरतीब के साथ कंकरी मारो । पहले जमरह सुग़रा (छोटा वाला) फिर जमरह उस्ता,(बीच वाला) फिर (जमरह अक़्बह,(बडावाला) शुरू छोटे जमरह से करो जो मक्कह से दोनों के हिसाब से अधिक दूर है, फिर दूसरे को और फिर जमरह अक़बह को, हर एक को सात सात कंकरी हर कंकरी के साथ अल्ला हुअक़्बर कहो ।

अगर मिना में केवल दो दिन ही रहना चाहो तो दूसरे दिन (१२ जिल्हिज्जह का सूरज ढ़लने के बाद कंकरी मार कर) सूरज डूबने से पहले ही वहाँ से निकल जाओ । अगर सूरज मिना ही में डूब गया तो तीसरे दिन भी ठेहरो तथा सूरज

ढ़लने के बाद कंकरी मारो। प्रन्तु अफ़ज़ल यही है कि तीसरी रात भी मिना ही में बिताई जाये।
बीमार और कमज़ोर आदमी के लिये जायज़ है कि कंकरी मारने के लिये किसी को अपना नायब (प्रतिनिधि)बना दें और नायब के लिये यह जायज़ है कि पहले अपनी ओर से फिर नायब बनाने वाले की ओर से एक ही बार में अलग अलग हर एक को सात सात कंकरियाँ मारे।
(10) हज्ज पूरा होने के बाद जब अपने देश वापस जाना चाहो तो विदाई तवाफ अन्तिम तवाफ़ करो केवल हैज़ तथा निफ़ास वाली औरत इस से अलग है।
☆ किसी मजबूरी के कारण दिन में कंकरी नहीं मार सका है तो उस दिन की कंकरी रात में मार सकता है।(फतावा इब्नेबाज़ ३८८)

मुहरिम के लिये आवश्यक बातें

हज्ज और उमरह का एहराम बांधने वालों के लिये निम्न बातें आवश्यक तथा ज़रूरी हैं।

(1) अल्लाह तआला ने जिन अमलों और कामों को अनिवार्य एंव फ़र्ज़ किया है उन की पाबन्दी करें जैसे पॉच समय नमाज़ जमाअत के साथ अदा करें।

(2) जिन कामों से अल्लाह ने रोका है उन से दूर रहें,गाली गुलूज एंव बुरी तथा गंदी बातों,लड़ाई ,झगड़ा और दूसरी नाफ़रमानी के तमाम कामों से बचता रहें।

(3) अपने कथन एंव कर्म से मुसलमानों को दुख न दें।

(4) एहराम के कारण रोके हुये कामों से बचें

एहराम बांधने के बाद यह काम करना वर्जित और हराम है।

१-बाल न काटे,नाखुन न काटे, अगर अपने से बाल गिर जाता है या नाखुन अलग हो जाता है तो कोई बात नहीं।

२-अपने शरीर तथा खाने पीने की चीज़ों में खुश्बू एवं सुगंध का प्रयोग न करे। एहराम की निय्यत करने से पहले जो खुश्बू लगाया था अगर उस का कोई चिन्ह बाक़ी है तो कोई बात नहीं।

३-खुश्की के शिकार के किसी जानवर को न मारे न बिदकाये और न ही दूसरों की इस कार्य में सहायता करे।

४-कोई मुहरिम या गैर मुहरिम हरम की सीमाओं के अंदर किसी पेड़ को न काटे और न

हरा पौदा उखाड़े, और न ही कोई गिरी पड़ी चीज़ उठाये(हॉ अगर एलान करने का इरादह हो तो फ़िर उठाना जायज़ है) इस लिये कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इन सारी बातौं से रोका है ।

५-महिलाओं को विवाह का पैगाम न दें,न अपने या किसी दूसरे के निकाह का कारण बने और जब तक एहराम मे हो शहवत एंव काम वास्ना के साथ औरत से मिलाप एंव सम्पर्क न करे ।

६-मर्द किसी चिपकने वाली चीज़ से अपना सिर न ढ़के छतरी या गाड़ी की छत से छाँव प्राप्त करने तथा सिर पर सामान उठाने में कोई बाधा नहीं ।

७-मर्द क़मीस या शरीर अनुसार कोई सिला हुआ कपड़ा पुरे अंग या अंग के किसी भाग के लिये प्रयोग न करे । टोपी, पगड़ी पाइजामह तथा मोज़े भी न पहने । अगर किसी के पास

नीचे के लियै लुंगी न हो तो पाइजामह और जूते न हों तो मूज़े पहन सकता है । औरत के लिये एहराम के समय दोनों हाथों में दसताने पहनना,या नक़ाब या बुरक़ा के ज़रयह अपने चेहरे को छिपाना मना है । अगर मर्दों का सामना हो रहा है तो फिर चेहरे को ओढ़नी या किसी और चीज़ से छिपाना ज़रूरी होगा वैसे ही जैसे एहराम के अतिरिक्त हालत में ज़रूरी है ।
अगर भूल से नादानी में सिला हुआ कपड़ा पहन लेता है या अपने सिर को ढ़क लेता है या खुश्बू लगा लेता है या अपना कोई बाल या नाखुन काट लेता है तो कोई दन्ड़ तथा जुर्माना नहीं है याद आने या नियम जान लेने के बाद जिस प्रकार हो दूर करे ।
कपड़े बदलना और साफ करना ,सिर तथा शरीर धोना,स्नान करना जायज़ है अगर इसी हालत में सिर का कोई बाल बिना इरादह गिर जाये तो कोई बात नहीं । इसी प्रकार अगर

मुहरिम को कोई घाव और ज़ख्म लग जाये तो कोई बात नही।

मस्जिद नबवी की ज़ियारत

(1) मस्जिद नबवी की ज़ियारत और उस में सलात (नमाज़) अदा करने की निय्यत से मदीनह मुनव्वरह की यात्रा और सफ़र करना जायज है इस लिये कि इस मस्जिद की एक नमाज़ मस्जिद हराम के अलावह तमाम मस्जिदों की हज़ार नमाज़ो से अफ़ज़ल एंव उत्तम है। जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है।

(2) मस्जिदे नब्वी की ज़ियारत के लिये एहराम तथा तल्बिय्यह की ज़रूरत नहीं और न ही हज्ज और उस के बीच कोई संबन्ध है।

(3) मस्जिद नबवी में प्रवेश करते समय पहले दायाँ पाँव बढ़ाओ तथा बिस्मिल्लाह कहो और

दरूद पढ़ो,अल्लाह से दुआ करो वह तुम्हारे लिये अपनी रहमत कृपा के दरवाज़े खोल दे गा और यह दुआ पढ़ो ।

अऊज़ु बिल्लाहिल अज़ीम व वज्हिहिल करीम व सुलता-निहिल क़दीम मिनश्शै-तानिर्रजीम, अल्लाहुम्मफ़्-तहली अबवाबा रहमति-क ।

أعوذ بالله العظيم ووجهه الكريم و سلطانه القديم من الشيطان الرجيم اللهم افتح لى أبواب رحمتك:

दूसरी मस्जिदों मे प्रवेश करते समय भी यही दुआ पढ़नी चाहिये।

(5) मस्जिद में प्रवेश करते ही सब से पहले तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ो । अगर रौज़ह(जन्नत की कियारी)में जगह मिल जाये तो बेहतर है, वरना फिर मस्जिद में किसी अस्थान पर पढ़ लो । फिर नबी करीम की क़ब्र पर जाओ तथा अदब के साथ धीमी अवाज़ में कहो अस्सलामु अलैका अय्युहन्नबीय्यो व रहमतुल्लाहि व बरकातुह

السلام عليك ايها النبى و رحمة الله و بركاته

और दरूद पढ़ो यह दुआ भी पढ़ सकते है अल्लाहुम्म आतिहिल वसीलता वल्फ़ज़ीलता वबअ़सहू मक़ामम महमूदनिल्लज़ी वअ़दतहू, अल्लाहुम्म अजज़िह अन उम्मतिह अफ़ज़ललजज़ा. फिर थोड़ा दायें और जा कर अबूबक्र रज़ियल्लाहुअन्हु की क़बर के सामने खड़े हो जाओ और उन के लिये मग़फिरत और रहमत की दुआ करो ,इस के बाद थोड़ा और दायें ओर जाकर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की क़बर के सामने खड़े हो सलाम करो तथा उन के वासते दुआ करो

(6)वज़ू करके मस्जिद कुबा जाना तथा उस में सलात पढ़ना सुन्नत है नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वंय ऐसा किया है तथा दूसरों को इस पर उभारा है ।

(7) बक़ी में जो लोग दफ़न हैं उन की तथा उसमान,शुहदाए उहुद और हमज़ह रज़ियल्लाहु अन्हुम की क़ब्रों की ज़ियारत भी साबित है उन को सलाम करो उन के वासते दुआ करो । इस

लिये कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन की ज़ियारत करते और उन के लिये दुआ करते थे। और सहाबा किराम को सिखाते थे कि जब क़ब्रों की ज़ियारत करो तो यह कहोः अस्सलामु-अलैकुम अहलद्दियारि मिनल्-मूमिनीन वल्मुस्लिमीन, व-इन्ना इन्शाअल्लाहु बिकुम लाहिकून नसअलुल्लाह-लना व लकुमुल-आफ़ियह (सही मुस्लिम)

मदीनह मुनव्वरह में कोई दुसरा स्थान या मस्जिद नहीं जिस की ज़ियारत जायज़ हो। इस वासते अपने आप को दुख न दो और न ही कोई ऐसा कार्य करो जिस का कोई पुण्य न प्राप्त हो बलकि उलटा पाप की संभावना एवं खतरह है।

वह गलतियाँ जो कुछ हाजी लोग करते हैं

एहराम की गलतियाँ

۞ बिना एहराम की निय्यत किये मीक़ात से आगे चला जाये यहाँ तक कि मीक़ात की सीमा के अन्दर पहुंच जाये और वहाँ से एहराम की निय्यत करे यह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश के खिलाफ है। हर हाजी को मीक़ात से एहराम की निय्यत कर लेनी चाहिये।

۞ जो कोई मीक़ात की सरहद से आगे चला जाये उसे वापस जाकर या तो मीक़ात से एहराम की निय्यत करनी चाहिये या एक फिदयह बलिदान दे, चाहे वह किसी भी मार्ग से आया हो

۞ अगर मीक़ात की पाँच मशहूर स्थानों में से किसी स्थान से भी गुज़रना हो तो जिस मीक़ात

का सामना पहले हो वहाँ से एहराम बाँधले. (मीक़ात पाँच हैं

(१) मदीनह वालों की मीक़ात ज़ुल्हुलैफ़ह है जिस को अब लोग अब्यारे अली कहते है ।

(२) शाम वालों की मीक़ात जुहफ़ह है यह राबिग़ के आसपास एक वीरान बस्ती है अब लोग वहीं से एहराम पहनते हैं ।

(३) नजद वालों की मीक़ात क़रने-मनाज़िल है जिसको आज सैल कहा जाता है (४) यमन वालों की मीक़ात यलमलम है ।

(५) एराक़ वालों की मीक़ात ज़ाते-इर्क़ है ।)

इन मीक़ातों को नबी करीम ने इन देश वालों के लिये चुना है यह उन सब के लिये भी है जो हज्ज और उमरह की निय्यत से इन मीक़ातौं से गुजरैं । हज्ज और उमरह की निय्यत से मक्कह आने वाले लोग अपने अपने मीक़ात से एहराम बाँधे बिना हरम में प्रवेश न करें ।

तवाफ़ की गलतियाँ

(१) हजरे अस्वद से पहले ही तवाफ़ का आरंभ करदेना जब कि ज़रूरी यह है कि तवाफ का आरंभ हजरे अस्वद से होना चाहिये ।

(२) हतीम के भीतर से तवाफ़ करे .ऐसी सूरत में उसने पुरे खाने कअ़बह का तवाफ नहीं किया इस लिये कि हतीम कअ़बह का एक भाग है । इस प्रकार उसका तवाफ़ असत्य और ग़लत हो जाये गा ।

(३) तवाफ़ के सातौं फेरों में तेज़ तथा दुलकी चाल चलना जबकि ऐसा करना केवल तवाफे कुदूम (मक्कह पहुंचते समय का पहला तवाफ)के केवल शुरू के तीन फेरो में हैं ।

(४) हजरे अस्वद को चूमने एंव चुम्बन देने के वासते ज़बरदस्ती के साथ भीड़ करना । कभी कभी मार पीट गाली गुलूज लोग करने लगते हैं ऐसा

करना कदापि उचित नहीं है । तवाफ़ के सही होने के लिये हजरे अस्वद को चुम्बन देना बिल्कुल आवश्यक एवं ज़रुरी नहीं । बल्कि दूर से केवल इशारह करना तथा अल्लाहु अक्बर कहना काफ़ी होगा ।

(५) हजरे अस्वद को बर्कत की निय्यत से छूना बिदअत है । शरीअत में इस की कोई दलील नहीं सुन्नत केवल उसका छूना अथवा हाथ से इशारह करना है ।

(६) ख़ाने कअ़बह के तमाम कोनों की ओर इशारह करना तथा कभी कभार उस की तमाम दीवारों की तरफ इशारह करना और छूना । नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हजरे अस्वद और रुक्ने यमानी के अलावह खाने कअ़बह के किसी भी भाग की ओर इशारह नहीं किया है ।

(७) तवाफ़ के हर फेरे के लिये अलग अलग दुआ़ खास करना । यह भी रसूल सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम से साबित नहीं है । केवल इतना

साबित है कि जब हजरे अस्वद के पास आते तब तक्बीर अल्लाहु अक्बर कहते,और हजरे अस्वद और रुक्ने यमानी के बीच हर चक्कर के अन्त में यह दुआ पढ़ते | रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तव्वफ़िल् आखि-रति ह-स-न-तव्वक़िना अज़ा-बन्नारि

ربنا آتنا فی الدنیا حسنة وفی الآخرة حسنة و قناعذاب النار

(८) कुछ तवाफ़ करने वाले ओर कुछ तवाफ़ कराने वाले अपनी आवाज़ें इतनी ऊँची करते हैं कि दूसरे तवाफ़ करने वालौं को परेशानी एवं बाधा होता है |

(९) मक़ामे इब्राहीम के पास सलात पढ़ने के लिये भीड़ करना सुन्नत के खिलाफ़ है और इस से तवाफ़ करने वालौं को दुख होता है मस्जिद में कहीं भी तवाफ़ की दो रकअ़त पढ़ लेना काफ़ी हों गी |

सई की गलतियाँ

(१) कुछ लोग सफा और मर्वह पर पहुंच कर खाने कअ़बह के ओर मुंह कर के अल्लाहु अक्बर कहते समय अपने हाथों से उस की ओर इस प्रकार इशारह करते हैं जैसे नमाज़ के लिये तकबीर कह रहे हों। इस प्रकार इशारह करना सही नहीं है। इस लिये कि नबी करीम सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम अपने दोनों हाथों को केवल दुआ़ के लिये उठाते थे। सही यह है कि अल्हमदु लिल्लाह कहे ओर क़िबलह की ओर मुख करके जो दुआ़ चाहे करे और बेहतर यह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सफा मर्वह पर जो दुआ़ साबित है उसे दुहराये।

(२) कुछ लोग सई के बीच पूरा समय दौड़ते रहते हैं प्रन्तु सुन्नत यह है कि केवल दोनों हरे निशानों के बीच दौड़े और बाक़ी समय चलता रहे।

मैदाने अरफ़ात की गलतियाँ

(१) कुछ हाजी लोग अरफ़ात की सीमा के बाहर ही पड़ाव ड़ाल देते हैं। और सूरज डूबने तक वहीं रहते है और अरफात में बिना ठहरे ही मुज़दलिफ़ह लौट आते हैं। यह बहुत बड़ी गलती है इस से हज्ज खो जाता है। इस लिये कि हज्ज अरफ़ात में ठहरने का नाम है। हाजी के लिये ज़रूरी है कि अरफ़ात के सीमा के अन्दर रहे अगर भीड़ या किसी और कारण से ऐसा न होसके तो सूरज डूबने से पहले प्रवेश करे और सूरज डूबने तक ठहरा रहे। अरफ़ात की सीमा के अन्दर रात के समय भी प्रवेश करना काफ़ी होगा और खास कर कुर्बानी की रात में।

(२) कुछ हाजी सूरज डूबने से पहले ही अरफ़ात से वापस लौट जाते हैं। ऐसा करना सही नहीं,इस लिये कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम अरफात में उस समय तक ठहरे रहते थे जब तक सूरज पूरे प्रकार से डूब न गया हो।

(३) कुछ लोग अरफात पहाड़ी की चोटी तक पहुँचने के लिए भीड और दूसरों को दुख पहुचाने का कारण बनते हैं। अरफ़ात के मैदान में किसी भी स्थान पर ठेहरना सही है और पहाड़ पर चढ़ना जायज़ नही है तथा न ही वहाँ नमाज़ अदा करना सही है।

(४) कुछ लोग दुआ करते समय अरफ़ात पहाड़ी की ओर मुंह करते है, जब कि सुन्नत क़िबलह की ओर मुंह करना है।

(५) कुछ लोग अरफ़ह के दिन खास स्थानों में मिट्टी तथा कंकरियों का ढ़ेर बनाते हैं, ऐसा करना शरीअत के खिलाफ़ है।

मुज़दलिफ़ह की गलतियाँ

कुछ लोग ऐसा करते हैं कि मुज़दलिफ़ह पहुंचते ही मग़रिब और इशा की नमाज़ पढ़ने से पहले कंकरियाँ चुनने लगते हैं और यह जानते हैं कि कंकरियाँ मुज़दलिफ़ह से ही होनी चाहये जबकि सही बात यह है कि कंकरियाँ हरम की सीमा के अन्दर कहीं से भी ली जासकती हैं और साबित यह है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने लिये जम्रह अक़बह की कंकरियाँ मुज़दलफ़ह से लेने का आज्ञा नहीं दिया था बल्कि सुबह को मुज़दलफ़ह से वापसी के बाद मिना से चुनी गईं थी। इसी प्रकार बाक़ी दिनों की कंकरियाँ भी मिना से ली गईं थीं,कुछ लोग कंकरियों को पानी से धुलते हैं यह काम भी साबित नहीं है।

कंकरी मारने की गलतियाँ

(१) कुछ लोग कंकरी मारते समय यह विश्वास रखते हैं कि वह शैतान को मारते हैं इस लिये उन शैतानों के खिलाफ़ गुस्सह ज़ाहिर करते है तथा गालियाँ भी देते हैं जबकि जमरात को कंकरी मारने का उद्देश्य अल्लाह को याद करना है ।

(२) कंकरी मारने के लिये बड़े पत्थर, जूते , चप्पल,लकड़ी का प्रयोग दीन में ज़्यादती हैं। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दीन में ज़्यादती से रोका है,साबित बात यह है कि छोटी कंकरियाँ प्रयोग की जायें जो बकरी की मेंगनी के प्रकार की हों ।

(३) कंकरियाँ मारते समय धक्कमपेल और मार धाड़ करना धर्मशास्त्र के खिलाफ़ बात है ।

प्रयास यह होनी चाहये कि बिना किस को दुख दिये हुए कंकरियाँ मारे ।

(४) सारी कंकरियाँ एक साथ मारना सही नहीं उलमा का फ़तवा यह है कि ऐसी सूरत में केवल एक कंकरी गिनी जायेंगी, इस लिये कि शरीअ़त का आदेश यह है कि कंकरियाँ एक एक करके मारी जायें और हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक्बर कही जाये ।

(५) क्षमता तथा ताक़त रखते हुये परेशानी और भीड़ से बचने के लिये कंकरी मारने के वासते किसी दूसरे को नायब बनाना सही नहीं । नायब बनाना केवल बीमारी या किसी और मजबूरी के कारण शक्ति न रखने पर जायज़ है ।

विदाई तवाफ की गलतियाँ

(१) कुछ लोग बारहवीं या तेरहवीं(१२-१३) ज़िल्हिज्जह को कंकरियाँ मारने से पहले मिना से मक्कह आते हैं विदाई तवाफ(अन्तिम तवाफ) करते हैं फिर मिना जाकर कंकरियाँ मारते हैं और वहीं से अपने शहर या देश आ जाते हैं, ऐसी सूरत में आखरी कार्य जमरात को कंकरी मारना होता हैं न कि कअ़बह का तवाफ़, जबकि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कहना है कि मक्कह मुकर्रमह को छोड़ने से पहले अन्तिम कार्य अल्लाह के घर का विदाई तवाफ़ होना चाहिये। इस लिये विदाई तवाफ हज्ज के कामों की समाप्ती तथा अपने देश का यात्रा से पहले होना चाहिये, उस के बाद मक्कह में देर तक न ठहरना चाहिये।

(२) कुछ लोग विदाई तवाफ (आखरी तवाफ़) के बाद मस्जिदे हराम से उलटे पावँ निकलते हैं

और मुंह कअ़बह की ओर होता है वह जानते हैं कि इस में खाने कअ़बह की सम्मान तथा आदर है जबकि यह बिल्कुल बिदअ़त है, दीन में इसकी कोई सच्चाई नहीं है ।

(३) कुछ लोग विदाई तवाफ़ के बाद मस्जिदे हराम के दरवाज़े पर पहुंच कर खाने कअ़बह की और मुंह करके खूब दुआ़यें करते है जैसे कि खाने कअ़बह को विदा कर रहे हों यह भी बिदअत है। शरीअत से इसका कोई सुबूत तथा प्रमाण नहीं ।

मस्जिद नबवी की ज़ियारत की गलतियां

(१) कुछ लोग रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र(समाधि) की ज़ियारत के समय दीवारों तथा लोहे की सलाखों पर हाथ फेरते हैं , खिड़कियों में बरकत प्राप्त करने की निय्यत से

धागे वगैरह बांधते हैं । जबकि बरकत उन कामों से प्राप्त होती है जिन को अल्लाह और उस के रसूल ने जायज़ किया हो । खुराफ़ात और बिदअतों से बरकत नही प्राप्त हो सकती ।

(२) उहुद पहाड़ के खोह(गुफ़ाओं) और मक्कह मुकर्रमह में सौर तथा हिरा गुफ़ाओं की ज़ियारत के वासते जाना, वहाँ धागे वगैरह बांधना तथा वहाँ दुआ़यें करना और उन सब कामों के लिये दुख उठाना , यह सारे कार्य बिदअत तथा दीन में नई बातैं हैं और शरीअ़त में इनका कोई सुबूत नहीं ।

(३) कुछ स्थानों के बारे में यह खियाल किया जाता है कि उन का सम्बंध रसूल सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम से रहा है जैसे कि ऊंटनी के बैठने का स्थान,अंगूठी वाला कुआँ,हज़रत उसमान का कुआँ, उन स्थानों की ज़ियारत करना और बरकत के वासते यहां की मिट्टी लेना बिदअत तथा बिना दलील है ।

(४) बक़ीअ़ तथा शुहदाये उहुद की क़ब्रों की ज़ियारत के समय मुरदों को पुकारना, क़ब्रों से कुर्बत तथा निकटता और क़ब्र वलों की बरकत और सम्न्नता प्राप्त करने के लिये वहां पैसे डालना,यह सब उलमा के लिखने के अनुसार महान हानिकारक और भयानक गलतियाँ तथा बडा शिर्क है । और रसूलुल्लाह की सुन्नत में इसकी खुली दलील मौजूद है । इस वासते कि इबादत केवल अल्लाह के लिये खास है । इबादत का कोई भी भाग अल्लाह के सिवाय के लिये जायज़ नहीं, जैसे दुआ, कुर्बानी,नज़र , नियाज़ आदि । अल्लाह का आदेश है कि :

وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاء (سورة بينة ٥)

(उन को इस बात का अदेश दिया गया है कि केवल वे अल्लाह की इबादत करैं) यह भी आदेश है : وَأَنَّ الْمَسَاجِدَ لِلَّهِ فَلا تَدْعُو مَعَ اللَّهِ أَحَداً(الجـن:ण)

(कि मस्जिदैं केवल अल्लाह के वासते हैं,अतः अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो(सूरह जिन१८)

हम अल्लाह से दुआ करते हैं कि वह मुसलमानों की हालात को सुधार दे तथा हम सब को फ़ितनों से बचाये वही सुनने वाला तथा कुबूल करने वाला है ।

संछिप्त हज्ज निर्देश
उमरह और ज़ियारत मस्जिदे-नबवी

(१) सब से पहले सारे पापों से सच्चे हृदय के साथ तौबह करे और हज्ज तथा उमरह के लिये हलाल माल ले ।

(२) झूट, ग़ीबत चुगुली तथा दूसरों का मज़ाक़ उड़ाने से अपनी ज़बान की हिफाज़त करे ।

(३) हज्ज और उमरह का मक़सद अल्लाह को खुश करना और आखिरत की तैय्यारी हो रियाकारी ,दिखावा, शुहरत, घमंड, न हो ।

(४) हज्ज-उमरह करने का तरीक़ह मालूम करे और कठिन मसलों को दूसरों से पूछे ।

हाजी जब मीक़ात पर पहुंचे तो उसे इखतियार है कि हज्ज इफराद, क़िरान. और तमत्तुो तीनों मे से किसी की निय्यत करे प्रन्तु अगर कोई आदमी कुर्बानी का जानवर नहीं लाया है तो उस के लिये अफ़ज़ल तमत्तुो है और जानवर लाया है तो उस के लिये अफ़ज़ल हज्ज क़िरान है ।

अगर किसी बीमारी या डेर के कारण से मुहरिम को डेर हो कि हो सकता है कि अपना हज्ज पूरा न कर पायेगा, तो बेहतर यह है कि निय्यत करते समय इन शब्दों को भी बढ़ा ले,,इन्न महिल्ली हैसो हबसतनी,, अर्थात जहाँ तू हमें रोक दे वहीं हलाल हो जाऊं गा ।

(५) छोटे बच्चे तथा छोटी बच्ची का हज्ज सही होगा प्रन्तु बालिग(प्रौढ़) होने के बाद फर्ज़ हज्ज की ओर से काफ़ी न होगा ।

(६) मुहरिम स्नान कर सकता है अपना सिर धो सकता है और खुजला सकता है ।

(७) औरत अपने चेहरे पर दुपट्टा डाल सकती है अगर यह डेर हो कि गैर मुहरिम(जिन से विवाह करना उचित है)लोग उस की ओर देख रहे है ।

(८) बहुत सी औरतैं दुपट्टा के नीचे कोई कडी चीज़ रखती हैं ताकि उसे चेहरे से दूर रख्खा जाये, शरीअ़त में इसकी कोई असलियत नहीं है ।

(९) मुहरिम अपने एहराम के कपड़े धुल सकता है उनके बदले दूसरे पहन सकता है ।

(१०) अगर मुहरिम आदमी ने भूल कर नादानी में सिला हुवा कपड़ा पहन लिया , या सिर ढ़क लिया, या खुश्बू लगा लिया तो उस पर कोई जुरमाना नहीं ।

(११) हाजी खाने कअ़बह पहुँचते ही तवाफ का आरंभ करने से पहले (अगर हज्ज तमत्तो या उमरह की निय्यत है) तल्बिय्यह बंद कर दे ।

(१२) तवाफ़ के पहले तीन फेरों में तेज़ चलना और दायें बगल के नीचे से चादर निकाल कर मोंढ़ा खुला रखना, केवल तवाफे कुदूम में साबित है तथा केवल मर्दों के लिये है।

(१३) अगर हाजी को शंका हो जाये कि उस ने तवाफ या सई के तीन चक्कर लगाये हैं या चार लगाये हैं तो केवल तीन माने।

(१४) अगर अधिक भीड़ हो जाये तो ज़मज़म और मक़ामे इब्रहीम के पीछे से तवाफ़ करने में कोई बात नहीं क्यों कि पूरी मस्जिद तवाफ का अस्थान है।

(१५) औरत के लिये यह पाप की बात है कि तवाफ़ की हालत में वह बनाव श्रृंगार किये हुए खुश्बू और बेपरदगी की हालत में हो।

(१६) अगर एहराम की नियत के बाद औरत को माहवारी शुरु हो जाती है या बच्चा पैदा होता है तो पाकी से पहले अल्लाह के घर का तवाफ़ करना उसके लिये सही न होगा।

(१७) औरत किसी भी कपड़े में एहराम की निय्यत करसकती है शर्त केवल यह है कि मर्दों के कपड़ों के प्रकार न हो, बेपर्दगी तथा श्रृंगार के वासते और इस्लाम के खिलाफ लिबास न पहने

(१८) हज्ज हो या उमरह किसी भी इबादत में निय्यत अल्फ़ाज़ तथा शब्दों में करना बिदअ़त है,तथा ऊँची आवाज़ में अदा करना तो और भी बुरा है ।

(१९) हज्ज या उमरह की निय्यत करने वाले बालिग़ मुसलमान के लिये बिना एहराम मीक़ात से आगे बढ़ना हराम है । जो हज्ज या उमरह करने वाले हवाईजहाज़ से आते है उनके लिये जहाज में सवार होने से पहले एहराम बांधने की तैय्यारी करलेनी जायज़ है ताकि जब मीक़ात के सामने से गुज़रैं तो एहराम की निय्यत कर लें ।

(२०) जिस किसी के ठहरने का स्थान मीक़ात की सीमा के अन्दर हो, वह अपने स्थान से हज्ज और उमरह के एहराम की निय्यत करेगा ।

(२१) कुछ लोग हज्ज के बाद तनईम या जइर्रानह से अधिक से अधिक उमरह करते हैं जबकि इसके जायज़ होने की कोई दलील मौजूद नहीं है ।

(२२) हाजी लोग आठवीं तारीख(८ज़ुल्हिज्जह) को मक्कह मुकर्रमह में अपने ठहरने के स्थान से हज्ज का एहराम बांध लेंगें, कअ़बह के परनाले के पास से एहराम ज़रूरी नहीं है जैसा कि बहुत से लोग करते हैं ।

(२३) (९ज़ुल्हिज्जह) नवीं तारीख को मिना से अरफ़ात के लिये जाना सूरज निकलने के बाद अफ़ज़ल है ।

(२४) सूरज डूबने से पहले अरफात से वापसी जायज़ नहीं सूरज डूबने के बाद रवानगी पुरे सुकून और शान्ति के साथ होनी चाहिइये ।

(२५) मुज़दलिफ़ह पहुचने के बाद मग़्रिब और इशा की नमाज़ पढ़ी जायेंगी, चाहे मग़्रिब का समय बाक़ी हो या इशा का समय आरंभ हो चुका

हो । हाँ अगर मुज़दलिफह पहुंचने से पहले इशा का समय समाप्त होने का खतरह हो तो रासते ही में पहले मग्रिब और उसके बाद इशा पढ़ लेंगे ।
(२६) कंकरियाँ कहीं से भी ले सकते हैं मुज़दलफह से लेना ज़रूरी नहीं ।
(२७) कंकरियों को धोना मुस्तहब नहीं इस लिये कि इस का सुबूत नबी करीम या सहाबा किराम से नहीं मिलता, ऐसी कंकरियों का प्रयोग करना सही नहीं जिन से पहले मारा जा चुका हो ।
(२८) कमज़ोर औरतें और बच्चे (और जो भी उन के प्रकार हो)आखरी पहर रात मे मुज़दलिफ़ह से मिना आ सकते हैं ।
(२९) हाजी जब ईद के दिन मिना पहुंचे तो लब्बैक कहना बंद करदे और जमरह अक़बह को सात कंकरियाँ मारे ज़रूरी नहीं कि कंकरियाँ अपने अस्थान में बाकी रहें,केवल शर्त यह है कि उसके सीमाकरण में गिरैं ।

(३०) कुर्बानी का समय उलमा के सही मत के अनुसार तशरीक के दिन(11-12-13-जुलहिज्जह) के तीसरे दिन के सूरज डूबने तक है।

(३१) ईद के दिन तवाफ़े ज़ियारत हज्ज का रुक्न है जिस के बिना हज्ज मुकम्मल नहीं होता प्रन्तु मिना में ठहरने के दिनों के बाद तक उसको पीछे करना जायज़ है।

(३२) इफ़राद और क़िरान हज्ज करने वाले पर केवल एक सई ज़रूरी है तथा कुर्बानी के दिन तक एहराम में रहेगा।

(३३) हाजी के लिये बेहतर है कि वह कुर्बानी के दिन के कामों में तरतीब का धियान रखें, पहले जमरह अक़बह को कंकरी मारे फिर सिर के बाल मुंड़ाये या कटवाये फिर अल्लाह के घर का तवाफ़ करे,उस के बाद सई करे।

(३४) अगर इन कामौ में आगे पीछै हो जाये तो कोई बात नहीं।

(३५) vh kam ijnko kr lene ke bad AadmI pUra hlal ho jata hE !

(१)जमरह अक़बह को कंकरी मारना (२) सिर के बाल कटवाना(३)तवाफ़े ज़ियारत और सई ।

(३६) अगर हाजी मिना से जल्दी वापस आना चाहता है तो बारह तारीख को सूरज डूबने से पहले ही मिना से निकल जाये । जो बच्चा कंकरी न मार सकता हो उस के बदले उसका वली अपनी ओर से कंकरी मारने के बाद मार सकता है ।

(३७) अगर कोई आदमी बीमारी या बुढ़ापे या कोई औरत हमल(गर्भ) के कारण से कंकरी नहीं मार सकती है तो किसी को भी अपना वकील बनादे ।

(३८) वकील या नायब के लिये यह जायज़ है कि एक ही समय में पहले अपनी कंकरी मारे फिर उस की जिसका वह वकील है ।

(३९) अगर हाजी हज्ज क़िरान या त-मत्तो कर रहा है और मक्कह का बासी नहीं है तो उस पर कुर्बानी ज़रूरी है एक बकरी अथवा गाय और ऊंट का सातवाँ भाग ।

(४०) अगर हज्ज क़िरान या त-मत्तो करने वाले के पास पैसे न हों तो तीन दिन हज्ज के दिनों में रोज़े रख्खे और सात रोज़े घर वापस पहुंच जाने के बाद ।

(४१) बेहतर यह है कि यह तीनों रोज़े अरफह के दिन से पहले ही रख लिये जायें ताकि अरफह के दिन रोज़े से न रहे, अगर पहले न रख सका हो तो कुर्बानी के बाद वाले तीन दिनों मे रख ले जिनको तशरीक़ के दिन कहते हैं ।

(४२) यह तीनों रोज़े लगातार तथा अलग अलग भी रखे जा सकते हैं, इसी प्रकार बाकी सात रोज़े भी । और विदाई तवाफ हैज़ और निफास वाली औरत के सिवाय हर हाजी पर वाजिब है, ।

(४३) मस्जिद नबवी की ज़ियारत सुन्नत है हज्ज से पहले या उस के बाद ।

(४४) मस्जिद नबवी की ज़ियारत करने वाला पहले मस्जिद में किसी भी स्थान पर दो रकअ़त तहिय्यतुल मस्जिद अदा करे, और बेहतर यह है कि यह दोनों रकअतें रौज़ह शरीफ़ में अदाकरे ।

(४५) रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र और दूसरी क़ब्रौं की ज़ियारत केवल मर्दों के लिये जायज़ है महिलाओं के लिये नहीं , पुरुषों के लिए भी इस शर्त के साथ कि सफर क़ब्र की ज़ियारत की निय्यत से न हो ।

(४६) कब्र को छूना, उस को बोसा देना या उसका तवाफ करना बहुत बुरी बिदअत है जिसका सुबूत सहबा किराम से नहीं मिलता, और अगर तवाफ का मक़सद रसूले करीम की नज़दीकी प्राप्त करना हो तो यह बड़ा शिर्क है ।

(४७) रसूले करीम से किसी प्रकार का सवाल करना शिर्क है ।

(४८) सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन क़ब्र में बरज़खी है मौत से पहले जैसी जीवन नहीं,इसकी हक़ीक़त और दशा की जानकारी केवल अल्लाह ही को है ।

(४९) कुछ ज़ियारत करने वाले रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र की ओर मुंह कर के दोनों हाथों को उठा कर दुआ करते हैं,ऐसा करना बिदअत है ।

(५०) रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र की ज़ियारत न वाजिब है और ना हज्ज पूरा होने के वासते शर्त है जैसा कि कुछ लोग जानते हैं ।

जिन हदीसों से कुछ लोग केवल, रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की क़ब्र की ज़ियारत की निय्यत से सफर के जायज़ होने पर दलील बनाते हैं या तो वे ज़ईफ़ हैं या मनगढ़त ।

अरफ़ात या मशअरे हराम और दूसरे स्थानों की कुछ दुआ़यें

(1) अल्लाहुम्म इन्नी अस्-अलु-कल्अफ्-व वल् आफ़ियह फ़ी दीनी व दुन्याया व अह्ली व माली.

(2) अल्लाहुम्मस्तुर औ़राती, वआमिन् रौआ़ती अल्लाहुम्महफ़ज़्नी मिन् बैनि यदय्या व मिन् ख़ल्फ़ी, वअ़न् यमीनी वअ़न् शिमाली व मिन् फ़ौक़ी, वअ़ऊजु बिअ़ज़्मतिक अन् उग़ताल मिन् तह्ती,

(3) अल्लाहुम्म आ़फ़िनी फ़ी बद्नी अल्लाहुम्म आ़फ़िनी फी सम्अ़ी,अल्लाहुम्म आ़फ़िनी फ़ी बस्री लाइलाहा इल्लाअंता,

(4) अल्लाहुम्म इन्नी अ़ऊजुबि-क मिनल् कुफ़्रि वल्फ़क्रि वमिन अ़ज़ाबिल क़बरि, लाइलाहा इल्ला अंत,

(5) अल्लाहुम्म अन्‌-त रब्बी लाइला-ह इल्ला अन्‌-त ख़-लक्‌-तनी व-अना अ़ब्दु-क व-अना अ़ला अ़हदि-क ववअ़दि-क मस्‌-त-तअ़तु+ वअ़ऊज़ु बि-क मिन्‌ शर्रि मा-सनअ्‌तु अबूउ,ल-क बिनिअ्‌मतिक अल-य्या व अबूउ बिज़म्‌बी फ़ग्‌फ़िर्‌ ली इन्नहू ला यग़्‌फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्ला अन्‌-त+.

(6) अल्लाहुम्म इन्नी अ़ऊज़ु बि-क मिनल्‌हम्मि वल्हुज़नि, वअ़ऊज़ु बि-क मिनल्‌अ़जज़ि व्ल्‌कस्‌लि, वमिनल्‌बुख्‌लि वल्‌जुब्‌नि वअ़ऊज़ु बि-क मिन्‌ ग़लबतिद्दैनि, व क़ह्‌र्रिजालि.

(7) अल्लाहुम्म-ज्‌अ़ल अवव-ल हाज़ल्‌यौम सलातन्‌ व अवसतहु फ़लाहन्‌, व आखिरहू नजाहन्‌ ,व अस्‌अलुक खैरैद्दुन्या वल्‌आखिरह या अरह्‌मर्राह्‌मीन

(8) अल्लाहुम्म इन्नी अस्‌अलु-कर्रिज़ा बअ़दल क़जाइ, व बर्‌दल ऐशि बअ़दल मौति, व लज़्ज़तन्नज़रि इला

वज्हिकल करीम वश्शौक़ इला लिक़ाइक़, फ़ी ग़ैरि ज़र्राअ मुज़िर्रह, वला फ़ित्नतिन् मुज़िल्लह, वअ़ऊज़ु बिक अन् अज्लिम अव उज़्लम, अव अअ़्तदी अव युअ़्तद अ़लैय्या, अव अक्तसिब खतीअतन् अव ज़म्बन् ला तग़्फ़िरुह.

(9) अल्लाहुम्म अऊज़ु बिक अन् उरद्द इला अरज़लिल् उम्रि.

(10) अल्लाहुम्महदिनी लिअहसनिल् आमालि वल् अख़लाक़ि ला यहदि लिअहसनिहा इल्ला अन्त वस्रिफ़ अ़न्नी सैय्यहा ला यस्रिफ़ु अ़न्नी सैय्यहा इल्ला अन्त.

(11) अल्लाहुम्म अस्लिह ली दीनी , व वस्सिअ़ ली फ़ी दारी व बारिक ली फ़ी रिज़्क़ी.

(12) अल्लाहुम्म इन्नी अ़ऊज़ु बिक मिनल्कुफ़रि वलफ़ुसूक़ि वश्शिक़ाक़ि वस्सुमअ़ति वर्रिया.वअ़ऊज़ु बिक मिनस्सममि वअल् बुक्मि वल्जुज़ामि व सैय्यइल्अस्क़ामि.

(13) अल्लाहुम्म आति नफ़्सी तक़्वाहा, व ज़क्किहा अन्ता खैरु मन् ज़क्काहा , अन्त वलिय्युहा व मौलाहा.

(14) अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन् इलमिन् ला यनफ़अु, व क़ल्बिन् ला यखशाअु, व नफ़सिन् ला तशबअु, व दअ़वतिन् ला युसतजाबु लहा.

(15) अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिनशर्रि मा अमिल्तु, व मिन शर्रि मा लम आअमल, व अऊज्‌ु बिका मिन् शर्रि मा अ़लिम्तु व मिन् शर्रि मा लम आ़लम.

(16) अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिन ज़वालि निअ़मतिक, वतहव्वुलि आ़फ़ियातिक, व फुज्अति निक़्मतिक, व जमीअ़ी सख़्तिक.

(17) अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिनल् हदमि वत्तरदि व मिनल् ग़र्क़ि वल्हरक़ि वल्हरमि,वअऊ़ज़ु बिक मिन् अंय्यखब्बतनी अश्शैतानु इन्दल मौति, वअ़ऊज़ु बिक मिन

अन् अमूत लदीग़न्, वअऊ़ज़ु बिक मिन् तमइन यहदी इला तबइन.

(18) अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिन मुनकरातिल् अख्लाक़ि वल आ़मालि वलअहवाइ वलअदवाइ , व अऊ़ज़ु बिका मिन ग़लबतिद्दैनि व शमाततिल आदाइ

(19) अल्लाहुम्म असलिह् ली दीनी अल्लज़ी हुवा इसमतु अम्री, वअसलिह् ली दुन्याया अल्लती फ़ीहा मआ़शी, वअसलिह् ली आखिरती अल्लती इलैहा मआ़दी, वजअ़लिल् हया-त ज़ियादतन ली फी कुल्लि खैर. व्जअलिल् मौ-त राहतन् ली मिन् कुल्लि शर्र, रब्बी अअ़िन्नी वला तुइन अलय्या,वनसुर्नी वलातनसुर अलय्या, वह्दिनी वयस्सिर हुदा ली.

(20) अललाहुम्मज अ़ल्नी ज़क्कारल्ल-क, शक्कारल्ल-क, मितीअ़ल्लक, मुख़बितल लक, अववाहन् मुनीबा, रब्बी तक़ब्बल

तौबती, वग़्सिल हौबती व अजिब दअ़वती, वह्दि क़ल्बी वसद्धिद लिसानी, वस्लुल सखीमतासदरी.

(21) अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक अस्सिबात फ़िल्अमरि वअज़ीमतर्रुश्दि, वअस्अलुक शुक्र निअमतिक व हुस्न इबादतिक व असअलुक क़लबन् सलीमन् वलिसानन सादिक़न्, व अस्अलुक मिन् खैरि मा तअ़लमु व अऊ़ज़ु बिक मिन् शर्रि मा तअ़लमु, व अस्तग़्फ़िरुक मिम्मा तअ़लमु व अन्त अल्लामुल गुयूब,

(22) अल्लाहुम्म अल्हिम्नी रुशदी, व क़िनी शर्रा नफ़सी.

(23) अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक फ़ेअ़लल खैरात व तर्कल मुन्करात, व हुब्बल्मसाकीन, व अन् तग़्फ़िरली व तरहमनी , व इज़ा अरदत बिइबादिक फ़ितनतन् फ़तवफ्फिनी इलेक गैर मफ़तून.

(24) अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक हुब्बक व हुब्ब मन् युहिब्बुक, वहुब्ब कुल्लि अम्लिन् युक़र्रिबुनी इला हुब्बिक.

(25) अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक खैरल मसअलति व खैरद्दुआइ व खैरन्निजाहि, व खैरस्सवाबि व सब्बितनी व सक्किल मवाज़ीनी व हक़्क़िक़ ईमानी वरफ़अ दरजती, व तक़ब्बल सलाती वइबादाती वग़्फिर खतीआती, व अस्अलुक अद्धरजातिलउला मिनल्जन्नह,

(26) अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक अन् तुबारिक फ़ी सम्ई व फी बसरी , व फ़ी खल्क़ी व फी खुलुक़ी व फ़ी अह्ली व फ़ी महयाया व फी अमली व तक़ब्बल हसनाती व अस्अलुक अद्धरजातिल्उ़ला मिनलजन्नह.

(27) अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक अन् तरफ़अ ज़िक्री, वतज़ाअ़ विज़री, व तुतहिहर क़ल्बी व तुहस्सिन फ़रजी, व तग़्फिर ली

ज़म्बी, व अस्अलुक अद्धरजातिल्उला मिनल जन्नह.

(28) अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक फ़वातिहलखैर व खवातिमहु, व जवामिअहु व अव्वलहू व आखिरहू व ज़ाहिरहू व बातिनहू वद्धरजातिल उला मिनल् जन्नह.

(29) अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन् जह्दिल बलाइ व दरकिश्शक़ाइ व सूइल क़ज़ाइ व शमाततिल अअ़दाइ.

(30) अल्लाहुम्म मुक़ल्लिबल कुलूबि सब्बित क़लबी अला दीनिक. अल्लाहुम्म मुसर्रिफ़ल कुलूब वलअब्सार सर्रिफ़ कुलूबना अला ताअतिक .

(31) अल्लाहुम्म जिद्ना वला तनकुसना व अक्रिमना वला तुहिन्ना व आतिना वला तहरिम्ना व आसिरना वलातुउसिर अलैना .

(32) अल्लाहुम्म अहसिन आक़िबतना फ़िलउमूरि कुल्लिहा व अजिरना मिन खिज़इद्दुन्या व अज़ाबिल् आखिरह.

(33) अल्लाहुम्मक़सिम लना मिन् खश्यतिक मा तहूलु बिही बैनना वबैन मअ़सियातिक, व मिन् ताअतिक मा तुबल्लिगुना बिही जन्नतक, व मिनल् यक़ीनि मा तुहव्विनु बिही अलैना मसाइबद्दुनया, व मत्तिअ़ना बिअस्माइना व अब्सारिना व कुव्वातिना मा अह्ययतना, वजअ़लहा अलवारिस मिन्ना वज्अल् सआरन अला मन् ज़लमना, वनसुरना अ़ला मन् आ़दाना वला तजअ़लिद्दुन्या अक्बर हम्मिना वला मबलग़ इलमिना वला तज्अ़ल मुसीबतना फ़ी दीनिना वला तुसल्लित अ़लैना बिजुनूबिना मन् ला यखाफ़ुका वला यरहमुना.

(34) अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मूजिबाति रहमतिक व अज़ाइम मग़फिरतिक वल ग़नीम-त मिन् कुल्लि बिर वस्सलाम-त. मिन् कुल्लि इस्म वल्फौ-ज़-बिलजन्नह वन्निजा-त-मिनन्नार.

(35) अल्लाहुम्म ला तदअ़ लना जम्बन् इल्ला ग़फ़रतह. वला ऐबन् इल्ला सतरतह वला हम्मन् इल्ला फ़र्रज्तह. वला दैनन् इल्ला क़ज़ैतह, वला हाजतन् मिन् हवाइजिद्दुनया वलआ़खिरह हि-य-ल-क-रिज़न् वलना सलाहन् इल्ला क़ज़ैतहा या अरहमर्राहिमीन.

(36) अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक रहमतन मिन इन्दिक तहदी बिहा क़लबी , व तजमउ बिहा अमरी, व तुलिम्मु बिहा शअ़सी व तहफ़जु .बिहा ग़ाइबी व तरफ़उ बिहा शाहिदी ,व तुबय्यजु बिहा वजही , व तुज़क्की बिहा अमली , वतुलहिमुनी बिहा

रुशदी, वतरुद्धु बिहलफ़ितन् अन्नी व तअ़सिमुनी बिहा मिन् कुल्लि सूइन.

(37) अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु-कल्फ़ौज़ यौमल् क़ज़ाइ व अैशस् सुअ़दाइ, व मनज़िलश् शुहदाइ व मुराफ़क़तल अर्मबियाइ वन्नसर अला आ़दाअ़.

(38) अल्लहुम्म इन्नी अस्अलुक सिह़्हतन् फ़ी ईमानी व ईमानन् फ़ी हुसनि खुलुक़ी, व नजाहन् यतबअ़ुहु फ़लाहुन् व रह़मतुन् मिनक व आ़फ़ियतन् मिनक व मग़फ़िरतन् मिन्क व रिज़्वान.

(39) अल्लहुम्म इन्नी अस्अलुक अस्सेह़्हता वलइफ़्फ़-त व हुस्नल् खुलुक़ि वर्रिज़ा बिलक़द्रि .

(40) अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बि-क मिन् शर्रि नफ़सी व मिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन् अन्त आखिज़ुम बिनासियातिहा, इन्न रब्बी अला सिरातिम मुसतक़ीम .

(41) अल्लाहुम्म इन्न-क तसमउ़ कलामी वत-र मकानी व तअ़लमु सिर्री व अ़लानियती वला यखफ़ अ़लैक शैउममिन् अमरी व अना अल्-बाइसुल फ़क़ीर वल मुसतगीसु अल-मुस्तजीर, वल्-वजिलुल् मुश्फ़िक़ु अल्मुक़िर्रु अल-मुअ़तरिफ़ु इलै-क बिजम्बी अस्अलुक मस्अलतल् मिस्कीन, व अबतहिलु इलैक इबतिहालल् मुज़्निब अज़्ज़लील. व अदऊ़क दुआ़-अल-खाइफि-अज़्ज़रीर दुआ़-अ मन् खज़अ़त ल-क रक़्बतुहू व ज़ल-ल ल-क जिस्मुहू, व रगि-म ल-क- अन्फ़ुहू.

व सल्लल्लाहु अला सैय्यदिना मुहम्मद व अला आलिही व सहबिही व सल्लम.

आप का शुभेच्छुक
अताउर्रहमान सईदी

محتويات الكتاب विषय सूची	पृष्ठ सं
1- भूमिका ।	1
2- हज्ज के यात्रा के लिये तय्यारी ।	5
3- मुख्तसर रहनुमाए हज्ज ।	9
4- हज्ज और उमरह ।	20
5- इस्लाम से निकाल देने वाली बातें ।	27
6- हज्ज,उमरह तथा मस्जिद नबवी की ज़ियारत ।	35
7- उमरह का तरीक़ह ।	37
8- हज्ज का बयान ।	42
9- मुहरिम के लिये आवश्यक बातें ।	49
10- एहराम बांधने के बाद यह काम हराम है ।	50
11- मस्जिद नबवी की ज़ियारत ।	53
12- एहराम की ग़लतियाँ ।	57
13- तवाफ़ की ग़लतियाँ ।	59
14-सई की गलतियाँ ।	62

15- मैदाने अरफ़ात की गलतियाँ ।	63
16-मुज़दलिफ़ह की गलतियाँ ।	65
17- कंकरी मारने की गलतियाँ ।	66
18- विदाई तवाफ़ की गलतियाँ ।	68
19- मस्जिद नबवी की ज़ियारत की गलतियाँ ।	69
20- संछिप्त हज्ज निर्देश ।	72
21- कुछ दुआ़यें ।	84